



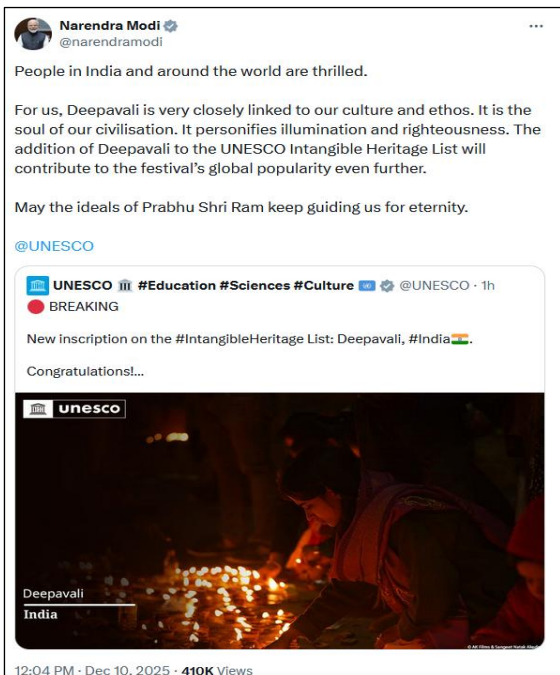
**BACKGROUNDEERS**  
Press Information Bureau  
Government of India

## एक उज्ज्वल सम्मान

### दीपावली यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल

10 दिसंबर 2025

रोशनी का पर्व दीपावली अब यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल हो गया है। इसकी औपचारिक घोषणा 8-13 दिसंबर 2025 को नई दिल्ली स्थित लाल किले में आयोजित 20वें यूनेस्को अंतर-सरकारी समिति सत्र में की गई। दीपावली का यह सम्मिलन भारत की ओर से सूचीबद्ध 16वाँ तत्व है। इस निर्णय को 194 सदस्य देशों के प्रतिनिधियों,



अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों और यूनेस्को के वैश्विक नेटवर्क के सदस्यों की उपस्थिति में अपनाया गया। दीपावली एक जीवंत और सतत विकसित होती सांस्कृतिक परंपरा है, जिसे समुदाय पीढ़ियों से संजोते और आगे बढ़ाते आ रहे हैं। यह सामाजिक सद्भाव, सामुदायिक सहभागिता और समग्र विकास को मजबूती प्रदान करती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दीपावली को मिली वैश्विक मान्यता का स्वागत करते हुए कहा कि यह पर्व भारत की संस्कृति, मूल्यों और सभ्यता की आत्मा से गहराई से जुड़ा हुआ है।

यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची में किसी भी तत्व को शामिल करने के लिए सदस्य देशों को मूल्यांकन के लिए एक विस्तृत नामांकन दस्तावेज़ प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। हर देश दो वर्ष में एक तत्व नामांकित कर सकता है। भारत ने 2024-25 चक्र के लिए 'दीपावली' पर्व को नामांकित किया था।

भारत के लिए दीपावली सिर्फ एक सालाना त्योहार से कहीं ज्यादा है; यह लाखों लोगों के इमोशनल और कल्चरल ताने-बाने में बुनी हुई एक जीती-जागती परंपरा है। हर साल, जब शहरों, गांवों और दूर-दराज के इलाकों में दीये जलने लगते हैं, तो दीपावली खुशी, नई शुरुआत और जुड़ाव की जानी-पहचानी भावना को फिर से जगाती है। यह लोगों को रुकने, याद करने और एक साथ आने के लिए बुलाती है ताकि दुनिया को याद दिलाया जा सके कि यह त्योहार इंसानियत की कीमती कल्चरल परंपराओं में सही मायने में क्यों जगह पाने का हकदार है।

इनटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज की सुरक्षा के लिए, UNESCO ने 17 अक्टूबर 2003 को पेरिस में अपने 32वें जनरल कॉन्फ्रेंस के दौरान 2003 कन्वेंशन को अपनाया। कन्वेंशन ने दुनिया भर की चिंताओं का जवाब दिया कि ग्लोबलाइज़ेशन, सामाजिक बदलाव और सीमित संसाधनों की वजह से जीवित सांस्कृतिक परंपराएं, बोलने के तरीके, परफॉर्मिंग आर्ट्स, सामाजिक रीति-रिवाज, रस्में, ज्ञान के तरीके और कारीगरी पर खतरा बढ़ रहा है और उन्हें बचाने की ज़रूरत है।

संस्कृति मंत्रालय ने इस फैसले का स्वागत किया और कहा कि इस लेख से भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के बारे में दुनिया भर में जागरूकता बढ़ेगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए समुदाय-आधारित परंपराओं की रक्षा के प्रयासों को मजबूती मिलेगी।

दीपावली, जिसे दिवाली भी कहते हैं, कार्तिक अमावस्या को मनाई जाती है, जो आमतौर पर अक्टूबर या नवंबर में आती है। दीपावली की बुनियादी सोच में सभी लोगों के लिए खुशहाली, नई शुरुआत और

*It is a moment of immense pride for India to witness Deepavali—our festival of lights—getting inscribed on the UNESCO List of Intangible Cultural Heritage of Humanity here at IGC 20.COM. This honour belongs to every home that has ever lit a 'diya' and kept alive the spirit of renewal and hope. Today's inscription is a global acknowledgement that this message resonates beyond borders and speaks to humanity's shared yearning for harmony. This inscription is not only recognition; it is a responsibility. In a divided and uncertain world, the simple yet resolute significance of Deepavali may continue to endure: the lamp may be one, but its light belongs to all.*

*-Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister of Culture & Tourism*

खुशहाली का जश्न मनाना शामिल है। इसका सबको साथ लेकर चलने वाला स्वभाव आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है और अलग-अलग लोगों और समुदायों के बीच अलग-अलग तरह के लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देता है; इसलिए, त्योहार का कोई भी पहलू सामाजिक मेलजोल और सांस्कृतिक एकता के सम्मान के उसूलों के खिलाफ नहीं है। घरों, सड़कों और मंदिरों को कई तेल के दीयों से रोशन किया जाता है, जिससे एक गर्म सुनहरी चमक निकलती है जो अंधेरे पर रोशनी और बुराई पर अच्छाई की

जीत दिखाती है। बाज़ार चमकीले कपड़ों और बारीक हाथ से बनी चीज़ों से भरे होते हैं जो रोशनी में चमकते हैं, जिससे त्योहार का माहौल और भी अच्छा हो जाता है। जैसे-जैसे शाम होती है, आसमान आतिशबाजी के शानदार नज़ारे से रोशन हो जाता है।



## दीपावली की प्रचलित कथाएं

- रामायण में, यह त्योहार भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के 14 साल के वनवास के बाद अयोध्या लौटने और रावण पर उनकी जीत का प्रतीक है, जिसका उत्सव दीये जलाकर मनाया जाता है। महाभारत में, यह पांडवों के वनवास के बाद लौटने का प्रतीक है।<sup>1</sup>
- नरक चतुर्दशी भगवान कृष्ण की नरकासुर पर जीत की याद में मनाई जाती है, जो बुराई के अंत का प्रतीक है।<sup>2</sup>
- माना जाता है कि दीपावली की रात देवी लक्ष्मी रोशनी वाले घरों में आती हैं।
- 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर ने दीपावली के दिन पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया था। उनके शिष्यों ने रोते हुए उनसे न जाने की विनती की। महावीर ने उनसे अपने भीतर का दीपक जलाने और अंधेरे पर विजय पाने का आग्रह किया। जैन भक्त इस त्योहार को निर्वाण दिवस के रूप में उत्साह के साथ मनाते हैं।<sup>3</sup>
- हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, तारकासुर के पुत्रों जिन्हें राक्षस त्रिपुरासुर कहा जाता था, को वरदान मिला था कि वे सिर्फ एक तीर से ही मारे जा सकते हैं। उन्होंने तब तक कहर बरपाया जब तक भगवान शिव ने त्रिपुरांतक के रूप में उन्हें एक तीर से खत्म नहीं

<sup>1</sup> <https://maharashtratourism.gov.in/festivals/diwali/>

<sup>2</sup> <https://magazines.odisha.gov.in/Orissareview/2013/nov/engpdf/19-20.pdf>

<sup>3</sup> <https://magazines.odisha.gov.in/Orissareview/2013/nov/engpdf/19-20.pdf>

कर दिया। इस जीत को दीपावली या देव दीपावली के रूप में मनाया जाता है, जिसमें भक्त गंगा में स्नान करते हैं, दीये जलाते हैं और भगवान शिव की पूजा करते हैं।

- राजा बलि की वापसी: महाराष्ट्र में दीपावली राजा बलि की यात्रा का प्रतीक है, जो न्याय और उदारता का प्रतीक है।<sup>4</sup>
- काली पूजा: बंगाल, ओडिशा और असम में दीपावली पर सुरक्षा और अंदरूनी शक्ति के लिए देवी काली की पूजा होती है।
- गोवर्धन/अन्नकूट: कुछ इलाकों में कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने की याद में, यह विनम्रता और प्रकृति के प्रति आभार का प्रतीक है।

दीये जलाने के साथ-साथ, दीपावली में कई तरह के काम शामिल हैं जैसे सुंदर रंगोली बनाना, मिठाइयाँ बनाना, घर सजाना, रस्में निभाना, तोहफे देना और कम्युनिटी में इकट्ठा होना। यह फसल, संस्कृति और पौराणिक कथाओं का जश्न मनाता है, जिसमें अलग-अलग इलाकों के बदलाव इसकी विविधता को दिखाते हैं। यह त्योहार उम्मीद,

खुशहाली और कम्युनिटी की भागीदारी के ज़रिए नएपन, नई शुरुआत और सामाजिक एकता को दिखाता है। दीपावली एक रात के उत्सव से कहीं अधिक है; यह पांच उत्सव के दिनों में खूबसूरती से मनाया जाता है, हर दिन का अपना



आकर्षण और महत्व होता है। त्योहार धनतेरस से शुरू होता है, जो शुभ शुरुआत का दिन है, जब परिवार नए धातु के बर्तन या ज़रूरी चीज़ें खरीदते हैं जो समृद्ध का प्रतीक हैं। अगली सुबह नरक चतुर्दशी होती है, जिसे नकारात्मकता को दूर करने और सकारात्मक ऊर्जा के लिए अनुष्ठानों और दीपक जलाने के साथ मनाया जाता है।

तीसरा दिन दीपावली का सबसे खास दिन होता है- पवित्र लक्ष्मी-गणेश की पूजा। घर रंग-बिरंगी रंगोली, स्वादिष्ट मिठाइयों की खुशबू और अनेक दीयों की रोशनी से रोशन हो जाते हैं।

चौथे दिन, परिवार और दोस्त एक-दूसरे से मिलते हैं, उपहार देते हैं और अपने रिश्तों को मजबूत करते हैं और खुशियों को साझा करते हैं। यह त्योहार भाई दूज के साथ खत्म होता है, जो भाई-बहन के रिश्ते

---

<sup>4</sup> <https://maharashtratourism.gov.in/festivals/diwali/>



का दिल से सम्मान करने वाला है, जिसे प्रार्थना, आशीर्वाद और रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है।<sup>5</sup>

दीपावली पूरे देश में रोजी-रोटी और पारंपरिक हुनर को बढ़ावा देती है। गांव के लोग इसे ऐसे रीति-रिवाजों से मनाते हैं जो प्रकृति का सम्मान करते हैं और खेती-बाड़ी के चक्र को दिखाते हैं। कारीगर—कुम्हार, लालटेन बनाने वाले, डेकोरेटर, फूलवाले, मिठाई बनाने वाले, जौहरी, कपड़ा कारीगर और छोटे बिज़नेस—इस त्योहार के दौरान आर्थिक गतिविधियों में बढ़ोतरी देखते हैं। उनका काम भारत की अर्थव्यवस्था के लिए बहुत ज़रूरी है।



दीपावली दान, उदारता और खाने की सुरक्षा के मूल्यों को भी मज़बूत करती है; कई समुदाय बुजुर्गों, देखने में अक्षम लोगों, जेल के कैदियों और खास ज़रूरतों वाले लोगों के लिए खाना बांटने, दान देने और खास सभाओं में शामिल होते हैं।

हाल के सालों में, पर्यावरण की देखभाल ने दीपावली मनाने की कहानी को तेज़ी से आकार दिया है। सरकारी दखल, जैसे CSIR-NEERI द्वारा “ग्रीन क्रैकर्स” का डेवलपमेंट और स्वच्छ दिवाली और शुभ दिवाली जैसे नेशनल कैम्पेन ने त्योहार की सांस्कृतिक भावना को बनाए रखते हुए इको-फ्रेंडली त्योहारों को बढ़ावा दिया है। घरों, बाज़ारों और पब्लिक जगहों की सफ़ाई से जुड़े रीति-रिवाज़ साफ-सफ़ाई और हेल्दी लाइफ़स्टाइल को बढ़ावा देते हैं, जबकि परिवारों और दोस्तों का एक साथ आना सामाजिक और भावनात्मक भलाई को बढ़ाता है।

दीपावली का कल्चरल इकोसिस्टम कई सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) में अहम योगदान देता है, जिसमें रोजी-रोटी के सपोर्ट से गरीबी कम करना, सबको साथ लेकर चलने और क्राफ़्ट परंपराओं से जेंडर इक्वालिटी, कम्युनिटी बॉन्डिंग और साफ़-सफ़ाई के तरीकों से भलाई, और कल्चरल ट्रांसमिशन से अच्छी शिक्षा शामिल है। UNESCO की इंसानियत की इनटैजिबल कल्चरल हेरिटेज की लिस्ट में दीपावली के लिए नॉमिनेशन प्रोसेस एक सबको साथ लेकर चलने वाले, कम्युनिटी-ड्रिवन अप्रोच को दिखाता है। मिनिस्ट्री ऑफ़ कल्चर के तहत संगीत नाटक अकादमी ने देश भर के स्कॉलर्स, प्रैक्टिशनर्स, आर्टिस्ट्स, राइटर्स और स्पेशलिस्ट्स की एक अलग-अलग तरह की एक्सपर्ट कमिटी बनाई। इसमें पूरे भारत के कम्युनिटीज़, हिमालय से लेकर तटों तक, और शहरों से लेकर दूर-दराज के गाँवों तक, डायस्पोरा, आदिवासी ग्रुप्स, ट्रांसजेंडर कम्युनिटीज़, और दूसरे जैसे आर्टिस्ट्स, किसान, और धार्मिक

<sup>5</sup> <https://www.incredibleindia.gov.in/en/festivals-and-events/diwali>

गुप्स शामिल थे। अलग-अलग फॉर्मेट्स में टेस्टिमोनियल्स में पर्सनल एक्सपीरियंस और दीपावली की कल्चरल इंपॉर्टेंस को दिखाया गया, कम्युनिटी की सहमति को कन्फर्म किया गया और एक जीती-जागती परंपरा के तौर पर इसकी डाइवर्सिटी और रेजिलिएंस को दिखाया गया।

UNESCO की इनटैंजिबल कल्चरल हेरिटेज लिस्ट में दीपावली का नाम आना उन लाखों लोगों को एक ट्रिब्यूट है जो इसे श्रद्धा से मनाते हैं, उन आर्टिस्ट्स को जो इसकी परंपराओं को ज़िंदा रखते हैं, और उन टाइमलेस प्रिंसिपल्स को जो यह दिखाता है। यह दुनिया को बताता है कि भारत की कल्चरल हेरिटेज को सिर्फ याद नहीं किया जाता, बल्कि इसे जिया जाता है, प्यार किया जाता है, और आगे बढ़ाया जाता है।

## संदर्भ

<https://www.incredibleindia.gov.in/en/festivals-and-events/diwali>

<https://utsav.gov.in/major-festival/diwali>

<https://magazines.odisha.gov.in/Orissareview/2013/nov/engpdf/19-20.pdf>

<https://www.tamilnadutourism.tn.gov.in/events/deepavali>

<https://maharashtratourism.gov.in/festivals/diwali/>

<https://utsavapp.in/gyan/g/dev-deepavali-history-significance-rituals>

*PIB Research*

पीके/केसी/एसके